डॉ. बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (assistant prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री
स्नातक राष्ट्रभाषा हिन्दी, द्वितीय वर्ष

दिनांक- 25.4.2020

'पाषाणी' का कथानक/कथ्य

'पाषाणी' आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री रचित गीतिनाट्य है। स्वयं कवि ने इसे शैली रूप में 'संगीतिका' की संज्ञा दी है। इस गीतिनाट्य में अहल्या की सुप्रसिद्ध कथा को आधुनिक सन्दर्भ में पूरी तरह मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करते हुए भाव-प्रवण रूप में उपस्थापित किया गया है। गीतिनाट्य के आरम्भ में ही युवती अहल्या के अनुरागपूर्ण गीत गाने का दृश्य उपस्थित किया गया है। अहल्या क्षोभ, दुःख एवं आश्चर्य मिले हुए अनुराग भरे स्वर में गीत गाती रहती है कि तपोवन के पवित्र वातावरण में भी मन रूपी दीप चंचल क्यों है! यह गीत उसके मन के अनुराग और यौवन की अतृप्ति को प्रकट करता है। उस समय तपोवन में एक राजकुमारी अपनी सखियों के साथ भ्रमण तथा मन की शांति के लिए आयी रहती है। वह अहल्या का गान सुनकर आश्चर्य-मिश्रित आकर्षण के साथ उसके पास जाती है और अपना आश्चर्य प्रकट करती है कि इस तपोवन में भी ऐसा राग ? मल्लिका स्वयं विवाहित जीवन में पड़ने से डरती है और तपोवन के शांत वातावरण की ओर आकर्षित होती है; परंतु अहल्या तपोवन की शांति में भी अशांति का भाव प्रकट करती है।

अहल्या उसे बताती है कि वह भी एक राजकुमारी ही थी, जिस पर मल्लिका को बहुत आश्चर्य होता है। परंतु, अहल्या बताती है कि उसके माता-पिता लंबे समय तक निस्संतान रहे और तब एक दिन गौतम ऋषि वहाँ पधारे तथा उन्होंने उसके माता-पिता से कहा कि वे तपोबल से उन्हें अनेक संतान दे सकते हैं, परंतु पहली संतान उन्हें दे देना होगा। अहल्या के माता-पिता हर कीमत पर संतान चाहते रहते हैं, इसलिए तुरंत गौतम ऋषि की शर्त मान लेते हैं। यही कारण है कि अहल्या को गौतम ऋषि के पास आना पड़ा। इस सांकेतिक वार्तालाप से मल्लिका समझ जाती है कि अहल्या मन से अतृप्त है और वृद्ध गौतम ऋषि का इसे पत्नी रूप में अपनाना सरासर अन्याय है। इससे क्षुब्ध होकर तपोवन के प्रति अपनी पूर्व धारणा से डिगते हुए मल्लिका लौट जाती है।

बाद के दृश्य में दिखाया जाता है कि वृद्ध गौतम ऋषि थके हुए आते हैं। उनके स्वर भी थके हुए,

परंतु मन में उत्साह रहता है। अहल्या से बातचीत में उन्हें आभास हो जाता है कि अहल्या का मन स्थिर न होकर तरंगायित है। गौतम ऋषि कारण पूछते हैं। अहल्या तो किसी कारण के न होने की ही बात करती है, परंतु फिर बताती है कि राजकुमारी मल्लिका आयी थी। उसकी तत्सन्दर्भित बातों से गौतम ऋषि भी समझ जाते हैं कि अहल्या का मन अनुरागपूर्ण हो गया है। वह उसे तप-संयम का महत्त्व समझाने लगते हैं और अहल्या तप का नाम भी नहीं सुनना चाहती है। गौतम ऋषि कहते हैं कि तुम्हारी सात्विकता पर राजस् भाव का प्रभाव हो गया है और अहल्या कहती है कि सात्विकता राजस् के रस से ही सिक्त होती है अन्यथा वह तो पथरीली और अनुर्वर ही रह जाएगी जिसका कोई उपयोग नहीं। गौतम ऋषि उसे याज्ञवल्क्य की दो पत्नियों, कात्यायनी और मैत्रेयी, की कहानी सुनाने लगते हैं कि किस प्रकार कात्यायनी में लौकिकता का भाव था, परंतु मैत्रेयी लौकिकता से परे शाश्वत और अनश्वर को ही चाहती थी। गौतम को आशा थी कि यह कहानी अहल्या के अशांत मन को शांति प्रदान करेगी; परंतु जब वे कहानी का प्रभाव देखने के लिए अहल्या की ओर देखते हैं तो उन्हें यह जानकर अत्यंत दुख होता है कि वह तो कब का सो चुकी थी और संभवतः उसने कहानी बिल्कुल नहीं सुनी थी।

इसके बाद अहल्या के सोये हुए में सपने का दृश्य है। उसके स्वप्न में ही इन्द्र गौतम ऋषि के छद्म वेश में आते हैं। अहल्या का मन भी आकर्षित होता है, परंतु फिर वह इंद्र को भगाने लगती है और उसके भगाने वाले स्वर को सुनकर गौतम ऋषि की भी नींद खुल जाती है और वह अहल्या से पूछने लगते हैं कि स्वप्न में किसे भगा रही हो? जगकर अहल्या अव्यवस्थित चित्त से ही बताती है कि हर समय इंद्र का वर्णन सुनकर उसके मन में इंद्र के प्रति आकर्षण भाव हो जाता है। अपने मन का चोर भी न छुपाकर अहल्या बताती है कि स्वप्न में उसे इंद्र परेशान कर रहे थे। गौतम ऋषि अत्यंत दुःखी होते हैं। अहल्या के अनुराग को वे समझते हैं और अपने ऊपर उन्हें अत्यंत ग्लानि भी होती है। अहल्या को सात्विक भावयुक्त न बना पाने की ग्लानि तो रहती ही है, साथ ही उसकी अतृप्ति भी उन्हें चुभती है और अहल्या पर क्रोध आने की अपेक्षा उन्हें अपने पर ग्लानी ही बढ़ती जाती है तथा अपना ही जीवन निरर्थक लगने लगता है। इसी शोक में वे मूर्छित हो जाते हैं। सुबह हो चुकी रहती है। आश्रम के ब्रह्मचारी स्नान करके गान गाते हुए आते हैं कि भले ही आसमान के तारे मलिन हो गये हों पर नयनों के तारे स्वच्छ रहे। यह गीत सुनकर अहल्या के मन में 'मैं कौन हूँ', 'मैं कौन हूँ' की भावना जगती है और गौतम ऋषि की ओर से दुःख और क्षोभ मिला हुआ उत्तर मिलता है- 'पाषाणी', 'पाषाणी'। अहल्या 'नहीं-नहीं' कर उठती है। वह गीतों के माध्यम से अपने जीवन को सहज स्वाभाविक मानते हुए अपने आप को पाषाणी कहे जाने का पुरजोर विरोध करती है। उसके अनुसार ऊँचाई और गहराई दोनों असंतुलन हैं। पर्वत ऊँचा होकर भी चुप रहता है, सागर गहरा होकर भी गरजता है। अतः किसके किस बात को वर्जना समझा जाय। उसे तो समतल जीवन का स्वरूप ही उचित जान पड़ता है। समतल में बहती धारा ही जीवन की सहजता है और उसे अपना जीवन भी इसी तरह का लगने से किसी प्रकार की अनुचित भावना का बोध नहीं होता। अतः गौतम ऋषि द्वारा उसे पाषाणी कहे जाना अन्याय लगता है। इसी के साथ गीतिनाट्य समाप्त हो जाता है।

कवि जानकीवल्लभ शास्त्री वाल्मीकीय रामायण की हाड़-मांस से बनी सहज मानवीय एवं तुलसीदास के रामचरितमानस में वर्णित अति पावनी पूज्य चरित्र वाली अहिल्या -- दोनों से दूरी रखते हुए नारी जीवन के सहज प्रवाह को दर्शाते हैं। वाल्मीकि की अहल्या मानवीय दुर्बलता से युक्त है तथा वह यह जानकर भी कि इंद्र गौतम वेश में आकर उसके साथ छल कर रहे हैं, फिर भी उसके साथ सहवासरत हो जाती है, क्योंकि उसे यह गर्व ही होता है कि वह इतनी विशिष्ट तो है कि स्वयं देवराज इंद्र भी उसे चाहते हैं; और संतुष्ट होकर वह ऋषिवेश धारी इंद्र को जल्दी से सुरक्षित भाग जाने के लिए भी कहती है। परंतु,

तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में अहल्या के चरित्र को परम पावन बनाकर प्रस्तुत किया है, जिसमें विकार का लेशमात्र भी नहीं दिखाया है। तुलसी वस्तुतः अपने भटके हुए युग को राह दिखाना चाहते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम का आदर्श चरित्र अपनाने के कारण गौण चरित्रों के द्वारा भी मर्यादा की स्थापना में ही सहयोग लेना चाहते थे। जानकीवल्लभ शास्त्री के सामने ऐसा कोई उद्देश्य नहीं रहा है। वे मानव मन की सहज प्रणय भावना को वाणी देते हैं। जैविक जटिलता को समझने-समझाने का काम करते हैं और अहल्या को दोनों अतियों से बचाते हुए सहज पथ पर रखते हैं। उसमें भरपूर अनुराग है परंतु वासना की विकलता नहीं है। इसी प्रकार उन्नत सोच की होकर भी उसका मन वैराग्य भरा नहीं है और इसे वह स्पष्टता से स्वीकार करती है तथा इसे ही उचित भी मानती है।

गीतिनाट्य की शैली वाली इस काव्य में कवि उच्छृंखल भोग का समर्थन नहीं करते हैं, परंतु अनुराग, प्रेम एवं प्रणय को मानव जीवन की सहजता स्वीकार करते हैं तथा थोपे हुए एवं असामयिक वैराग्य को मानवता के प्रति अन्याय पूर्ण मानते हैं।